Deccan Chronicle 21-March-2021

BOARD'S STAFF GOES DOOR TO DOOR ON FREE WATER SCHEME

SANJAY SAMUEL PAUL | DC
HYDERABAD, MARCH 20

The free 20,000-litre drinking water supply launched in January by minister K.T. Rama Rao will benefit nine lakh households in the city, said Dana Kishore, managing director of the Metropolitan Water Board. There is now an effort to raise awareness about the programme.

Speaking to *Deccan Chronicle*, he said, "Officials are going on a door to door campaign to enlighten people about the scheme. Many of the domestic connections are without water meters, and the department is helping them fix the meters in order to get the free water." It is mandatory for houseowners to have the water meter to benefit from the scheme.

T. Srinivas, deputy general manager, Division 4, said, "The door to door campaign is helping consumers understand the scheme. We have covered Band Lines, Gunfoundry, Chirag Ali lane, Nampally, Adarshnagar, Basheerbagh and Palace Colony. People are showing a lot of interest in installing water meters."

Work inspector A. Gopal Rao said, "In order to make it easy for households we are also helping them fix meters."

The scheme costs the government ₹500 crore per annum. Using more than 20KL of water will be charged according to the tariff. All eligible customers have to link their Aadhar card details to their Consumer Account Number (CAN).

The Tribune 21-March-2021

60 natural ponds to be revived in G'gram

GURUGRAM, MARCH 20

The Gurugram administration has tied up with local firms to revive 60 natural ponds to deal with the alarming dip in the water table in many villages. The firms will take up the project under the company social responsibility (CSR) programme and a blueprint for the revival project has been prepared.

The administration has identified 320 reservoirs in Gurugram for revival. By the year-end, the administration along with the Haryana Pond and Waste Water Management Authority will jointly rejuvenate 60 reservoirs.

DC Yash Garg said so far, the district administration had revived six ponds in collaboration with gram panchayats and firms under the CSR programme. "Besides, the rejuvenation of 11 ponds in various villages is in progress," he said. — OC

1,969 POLLUTED

- The Haryana Pond and Waste Water Management Authority has identified 1,969 polluted ponds in the state
- Of these, 1,890 ponds will be cleaned in three years
- This year, 682 ponds will be rejuvenated, of which nine have been revived

Navbharat Times 21-March-2021

राजधानी को मिल गई एक नई झील

Poonam.Gaur@timesgroup.com

नई दिल्ली : द्वारका में एक और झील बनकर तैयार हो गई है। हालांकि अभी यह पानी से पूरी तरह भरी नहीं है। सेक्टर-16 में बनी यह झील सात एकड़ एरिया में फैली हुई है। डीजेबी (दिल्ली जल बोर्ड) के अनुसार, पप्पन कलां सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट से ट्रीट हो रहे पानी से इस झील को भरा जा रहा है। अब रोज 5 मिलियन ट्रीटेट पानी से बढ़ाकर इसकी मात्रा 10 मिलियन ट्रीटेड पानी कर दी गई है।

डीजेबी ने द्वारका में किया है तैयार, ट्रीटेड पानी से इसे भरा जाएगा

डीजेबी राजधानी को राजस्थान के उदयपुर की तर्ज पर 'झीलों का शहर' बनाने के प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है। इसके तहत पूरी दिल्ली की कई झीलों को रिवाइव करने की प्लानिंग की गई है। नई झील भी इसी प्रोजेक्ट का हिस्सा है। 28000 स्क्वायर मीटर में फैली यह नई झील करीब 2.5 करोड़ के बजट से तैयार की गई है। महज सात महीने में यह झील तैयार हो गई। डीजेबी के अनुसार, ट्रीटेट पानी को इस झील में डालने से पहले

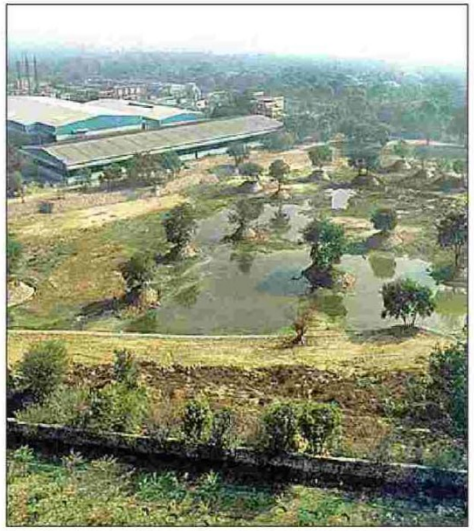

उसे दो प्राकृतिक तरीकों से फिल्टर किया जाता है। झील में पानी की गुणवत्ता काफी अच्छी है और इस पानी में बीओडी (बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड) और टोटल ससपेंडेड सॉलिड का रेश्यो काफी अच्छा है। इस प्रोजेक्ट के तहत रोहिणी, तिमारपुर आदि की झीलें भी जल्द तैयार हो जाएंगी।

यह झील डीजेबी के सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट के परिसर में ही है, इसलिए इस झील में आम लोगों की एंट्री नहीं है। न ही इस झील का इस्तेमाल रिक्रिएशन प्लेस के तौर पर लोग कर सकते हैं। इस झील को भूजल स्तर बढ़ाने के मकसद से तैयार किया गया है। इस तरह की झील उन एरिया में तैयार की जा रही हैं, जहां भूजल स्तर 12 से 15 मीटर नीचे चला गया है। डीजेबी के अनुसार, भविष्य में इन जगहों पर भूजल स्तर पर्याप्त स्तर पर पहुंचने के बाद बोरवेल से उसे निकाला जा सकता है। इन जगहों पर ट्यूबवेल लगाए जा सकते हैं।

इस जगह के आसपास कुछ एजुकेशन इंस्टिट्यूट भी हैं। ऐसे में इन इंस्टिट्यूटों में इस्तेमाल के लिए भविष्य में यहां ट्यूबवेल लगाए जा सकते हैं। लेकिन इसके लिए यह जरूरी है कि भूजल स्तर 7 से 8 मीटर तक पहुंच जाए। डीजेबी से मिली जानकारी के अनुसार, 155 झीलों को इस साल जून तक पूरा किया जाना है। इसके बाद 42 तालाब जनवरी-2022 तक तैयार किए जाएंगे। बाकी झीलें 2022 में दिसंबर तक तैयार हो जाएंगी।

Haribhoomi 21-March-2021

फिरोजपुर और नगीना में तीन नए एमबीएस बनेंगे

अब 248 करोड़ रुपए की लागत से बुझेगी नगीना के 44 गांवों की प्यासः चौटाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नूंह

मेवात में पेयजल संकट को देखते हुए सरकार ने नगीना ब्लॉक के 44 गांवों की प्यास बुझाने के लिए 228 करोड 45 लाख रुपए के प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी है। जिसे उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के प्रयासों से जेजेपी व भाजपा सरकार की तरफ से स्वीकृत किया गया है। इस परियोजना के तहत उमरा, जलालपुर फिरोजपुर और नगीना में तीन नए एमबीएस बनाए जाएंगे। प्रोजेक्ट को तैयार होने में लगभग दो साल का समय लगेगा। यह जानकारी इनसो के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिग्विजय चौटाला ने नूंह पहुंच कर दी। उन्होंने बताया कि बीते साल मेवात के बडकली चौक पर किसान रैली में पहुंचे उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने इस परियोजना का ऐलान किया था, जिसे अमलीजामा पहनाते हुए कार्य की मंजूरी दे दी गई है। दिग्विजय चौटाला ने कहा कि उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने सदन में बताया कि मेवात को हम औद्योगिक नगरी के रूप में विकसित करेंगे। आज देश-विदेश की बड़ी-बड़ी कंपनियां मेवात के औद्योगिक क्षेत्र रोजकामेव में निवेश के लिए तैयार हो रही हैं। यहां के युवाओं को नौकरी में रोजगार के भरपूर अवसर मिलेंगे। अब आर्थिक रूप से मेवात विकसित व मजबूत होगा।

कांग्रेस पर साधा निशाना कहा कांग्रेस ने हर एक वर्ग को ठगा

वहीं चौटाला ने कांग्रेस पर प्रहार करते हुए कहा कि कांग्रेस ने विकास के नाम पर मेवात के छात्र, युवा, किसान जैसे हर वर्ग के लोगों को ठगा है। जबकि इस गठबंधन सरकार में उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला मेवात के विकास को लेकर गंभीर हैं। हर संभव प्रयास होगा कि इस सरकार में मेवात के सभी आवश्यक मांग पूरी हो व यहां के लोगों को उनका हक मिले। जिला प्रवक्ता एडवोकेट राहुल जैन ने बताया कि दिग्विजय चौटाला मेवात जिलाध्यक्ष की बेटी की शादी में सोहना शरीक हुए। उसके पश्चात नूंह हल्का प्रधान आस मोहम्मद के यहां भी जलपान ग्रहण किया। मेवात के जेजेपी कार्यकर्ताओं का हालचाल जाना। इस मौके पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य बदरुद्दीन चेयरमैन, पूर्व प्रत्याशी इकबाल जेलदार, पूर्व प्रत्याशी अमन अहमद, जेजेपी नेता नासिर हुसैन, जिला प्रवक्ता एडवोकेट राहुल जैन, युवा जिलाध्यक्ष वसीम अहमद, इनसो प्रधान साकिर हुसैन, अल्पसंख्यक जिला प्रधान जान मोहम्मद, जावेद सालाहेडी, वरिष्ठ नेता गणेश दास अरोड़ा, सिराजुद्दीन शिराज, डॉक्टर जावेद, न्याजू, साहून पहलवान सहित काफी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

Dainik Bhaskar 21-March-2021

भारत के दो पनबिजली संयंत्रों पर पाक को ऐतराज, 23 को बैठक

इस्लामाबाद | भारत के पकाल डल और लोअर कलनई पनबिजली संयंत्रों पर पाकिस्तान को ऐतराज है। उसके प्रतिनिधि अगले सप्ताह नई दिल्ली में सिंधु जल आयोग की बैठक में इस पर औपचारिक आपत्ति दर्ज करा सकते हैं। पाकिस्तानी विदेश कार्यालय के प्रवक्ता जाहिद चौधरी ने इसके संकेत दिए हैं। चौधरी ने कहा है कि पाकिस्तान दोनों जलविद्युत संयंत्रों पर आपत्तियों सहित सिंधु जल संधि से जुड़े कई मुद्दों पर चर्चा करेगा। ये परियोजनाएं पाकिस्तान के पानी को रोकने की कोशिश है। संयंत्रों का निर्माण सिंधु जल संधि का उल्लंघन है। भारत को इनका निर्माण रोकना चाहिए। पाकिस्तान को सिंधु नदी के पानी का उचित हिस्सा देना चाहिए। बैठक 23-24 मार्च को होनी है। इसमें सिंधु जल आयुक्त मेहर अली शाह पाकिस्तान के प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे।

Amar Ujala 21-March-2021

22 मार्च को विश्व जल दिवस है। हमारे देश में लाखों लोगों को आज भी पीने के लिए साफ पानी नहीं मिल पाता है। जल दिवस के मौके पर पानी को बचाने का वादा क्या हम खुद से नहीं कर सकते?

पानी की एक-एक बूंद है बेशकीमती

जल संचयन के प्रयास जरूरी

भारत में पेयजल संकट एक प्रमुख समस्या है। भूमिगत जल का स्तर लगातार नीचे जा रहा है और इस वजह से पीने के पानी की किल्लत बढ़ रही है। सिकुड़ती हरित पट्टी इसका मुख्य कारण है। पेड़ों से पर्याप्त मात्रा में वर्षा हासिल होती है, वहीं यही पेड़ भूमिगत जल का स्तर बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। तेज गति से होने वाले विकास कार्यों ने हमारी हरित पट्टी को तेजी से नुकसान पहुंचाया है। उसी का नतीजा है कि न सिर्फ भूमिगत जल का स्तर नीचे गया है, बल्कि वर्षा में भी लगातार कमी आई है। गौरतलब है कि भारत में 200 साल पहले लगभग 21 लाख सात हजार तालाब थे। लाखों कुएं, बावड़ियां, झीलें, पोखर और झरने भी थे। हमारे देश की गोदी में हजारों नदियां खेलती थीं, किंतु आज वे नदियां हजारों में से केवल सैकड़ों में ही बची हैं। वे सब नदियां कहां गईं, कोई नहीं बता सकता। वर्षा जल संचय कई मायनों में महत्वपूर्ण है। वर्षा जल का उपयोग घरेलू काम, मसलन घर की सफाई, कपड़े धोने और खाना पकाने के लिए किया जा सकता है। वहीं औद्योगिक उपयोग की कुछ प्रक्रियाओं में इसका उपयोग किया जा सकता है। गर्मियों में वाष्पीकरण के कारण होने वाली पानी की किल्लत को 'पूरक जल स्रोत' के द्वारा कम किया जा सकता है, जिससे बोतल बंद पानी की कीमतें भी स्थिर रखी जा सकेंगी। यदि एक टैंक में पानी का व्यापक रूप से संचयन करें, तो सालभर पानी की पूर्ति के लिए हमें जलदाय विभाग के बिलों के भुगतान से निजात मिल सकती है। वहीं वर्षा जल संचयन को छोटे-छोटे माध्यमों में एकत्रित करके हम बाढ़ जैसे महाप्रलय से बच सकते हैं। इसके अतिरिक्त वर्षा जल का उपयोग भवन निर्माण, जल प्रदूषण को रोकने, सिंचाई करने, शौचालयों आदि कार्यों में बेहतर और सुलभ ढंग से किया जा सकता है, जो हमारे लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है। भारत की बढ़ती जनसंख्या के कारण जल की मांग में दिनों दिन वृद्धि आंकी जा रही है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक मानव का दायित्व बनता है कि वो अपने हिस्सा का पानी पहले से ही संग्रहित करके रखे, क्योंकि जल है तो कल है।

चिट्ठी 1

■ देवेन्द्रराज सुथार, जालोर

कहां चूक हो रही है जनता से?

साल 2020 में कोविड-19 की वजह से भारत में लॉकडाउन लगाया गया था और फिर धीरे-धीरे कई महीनों बाद अनलॉक प्रक्रिया शुरू हुई। उस दौरान जिस जगह कोरोना के मरीज मिल रहे थे, वह जगह सील कर दी जा रही थी। पिछला एक साल सब-कुछ बंद था, न जाने कितनी परेशानियां हम सबने झेलीं। कितनों के रोजगार छिन गए तो कितनों ने अपनों को खोया। यह महामारी का दौर लोगों ने कैसी-कैसी परेशानियां उठाकर देखा है, हम सभी को भली भांति पता है। खैर अब साल 2021 से कोरोना की वैक्सीन आ चुकी है और बड़ी तेजी से सभी लोगों को टीका लगाने की शुरुआत भी हो चुकी है। सभी स्वास्थ्य कर्मियों और पुलिस कर्मियों को लग भी चुकी है और अब आमजन को लगाने की प्रक्रिया चल रही है। इसके साथ ही फिर से एक बार कोरोना के नए मामले सामने आ रहे हैं, जो चिंता का विषय जरूर बन गया है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा मामले सामने आए हैं और नागपुर शहर में तो एक हफ्ते का पूर्ण लॉकडाउन भी लगा दिया गया है। इस दौरान सिर्फ जरूरत की चीजें उपलब्ध रहेंगी। पुणे शहर को पिंक जोन माना गया है। यहां तेजी से कोरोना मरीजों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। यहां हम सभी को यह सोचना बेहद जरूरी है कि आखिर क्यों ऐसा हो रहा है? क्यों हम सब फिर वही लापरवाही कर रहे हैं? क्या फिर से चाह रहे हैं कि वही बंदी का दौर देखें? क्यों हम अब भी मास्क का प्रयोग नहीं कर रहें हैं या सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं कर रहे हैं। हम यह सोचें कि आखिर हमसे कहां चूक हो रही है, क्योंकि अगर लापरवाही बढ़ती रही तो कहीं फिर से संपूर्ण लॉकडाउन न लगाना पड़ जाए। एक बार इस मनोदशा से उभर चुके हैं, अब फिर से इसकी हिम्मत नहीं। इसलिए अभी से हम सभी को सजग रहना होगा। हम सब को यह भूलना नहीं चाहिए कि हमारी सुरक्षा हमारे ही हाथ में है। जब खुद जागरूक होंगे तभी सब होंगे, इसलिए बेहतर है पूरी सावधानी बरतें।

चिट्ठी 2

■ प्रीति अरुण त्रिपाठी, प्रयागराज

कविता

बचे रहने देना

बचे रहने देना
शहर का कोई
पुराना टूटा-किला
खंडहर...!
जहां से सुनाई पड़े उनके
हंसने-बोलने की आवाजें..!

बचे रहने देना..
पेड़ों की छांव
जहां, प्रेमी लेटे हों
अपनी प्रेमिका की गोद
में...!

और, प्रेमिका सहला
रही हो अपने प्रेमी
के बाल...!

बचे रहने देना
पार्क का कोई अकेला
बेंच, जहां बहुत ही करीब
से वो अपनी सांसों की
गर्माहट
को महसूस कर सकें...!

और ले सकें
अपने-अपने हाथों
में एक-दूसरे का हाथ...!

बचे रहने देना
नदी का वो खास किनारा
जहां, वे अपने मन की
कह सकें बात...!

एक, ऐसे समय में
जब, कंक्रीट के जंगल
तेजी से उगाए जा रहे हैं...!

और, हमारे बीच से लगभग
गायब, हो चुका है प्रेम...!

■ महेश कुमार केशरी, बोकारो

Rajasthan Patrika 21-March-2021

विश्व जल दिवस विशेष

दुनिया में 78 करोड़ से ज्यादा लोग शुद्ध जल से वंचित

1993 में संयुक्त राष्ट्र की ओर से 22 मार्च को विश्व जल दिवस की शुरुआत की गई थी, ताकि दुनिया में पानी के महत्व को लेकर जागरूकता लाई जा सके। संयुक्त राष्ट्र का 2030 तक सबको स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने का लक्ष्य है। दुनिया में जल के महत्व और इसके संकट को इन दस बिंदुओं से समझा जा सकता है।

165% भूजल दोहन के साथ पंजाब शीर्ष पर है। आंकड़े 2017 के

140% भूजल दोहन करने वाला राजस्थान, देश में दूसरे स्थान पर

120 वीं पायदान पर भारत जल गुणवत्ता में, 122 देशों में

295 में 184 अति दोहित भूजल ब्लॉक हैं राजस्थान में

1. दुनिया में करीब 78 करोड़ लोग आज भी शुद्ध पेयजल से वंचित हैं। यह संख्या अमरीका की आबादी से दोगुना से भी अधिक है।
2. कम विकसित देशों में स्वास्थ्य सुविधाओं का 22 फीसदी हिस्सा दूषित पानी से होने वाली बीमारियों पर खर्च हो जाता है।
3. उप सहारा अफ्रीका में हर वर्ष लड़कियों और महिलाओं के 4 हजार करोड़ घंटे पानी जुटाने में ही खर्च हो जाते हैं।
4. 40 करोड़ स्कूली दिवस हर वर्ष पानी से संबंधित बीमारियों में बर्बाद हो जाते हैं, इनमें 2.72 करोड़ अकेले डायरिया से बर्बाद होते हैं।
5. पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की गलेरिया और खसरे से ज्यादा मौतें दूषित जल व गंदगी के कारण होने वाली बीमारियों से होती हैं।

स्रोत : केंद्रीय भूजल बोर्ड